

शार्वरी स्त्री. (तत्.) रात, निशा, रात्रि पुं. बृहस्पति के 60 संवत्सरों के चक्र में से चौतीसवाँ।

शालंकायन पुं. (तत्.) ऋषि विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, नंदी।

शालंकि पुं. (तत्.) पाणिनि (एक प्रसिद्ध वैयाकरण)।

शाल पुं. (तत्.) 1. साखू वृक्ष (यह आकार में लम्बा होता है, इसके फूल पीताभ सफेद रंग के होते हैं, जो वसंत ऋतु में खिलते हैं) 2. मत्स्य विशेष 3. राजा शालिवाहन 4. चारदीवारी, घेरा स्त्री. (फा.) ऊनी या रेशमी चादर, ओढ़ने की गर्म चादर जो कश्मीर में दुंबे के बालों से बनती है।

शालक पुं. (तत्.) 1. एक राग विशेष 2. विदूषक 3. पटुआ।

शालग्राम पुं. (तत्.) 1. वैष्णवों का एक तीर्थ स्थान, जो गंडकी नदी के किनारे बसा एक ग्राम है 2. गंडकी नदी से प्राप्त होने वाला श्याम वर्ण का, गोलाकार, चिकना पत्थर, जिसकी पूजा विष्णु के रूप में की जाती है।

शालपर्णी स्त्री. (तत्.) औषधि के लिए उपयोगी एक छोटा वृक्ष, क्षुप, सरिवन वृक्ष (जिस पेड़ के पत्ते शाल वृक्ष के पत्तों की भाँति होते हैं)।

शालभंजिका स्त्री. (तत्.) 1. कठपुतली, पुतली, गुडिया 2. वेश्या 3. पत्थरों पर चित्रित ललित नारी चित्र।

शालभ वि. (तत्.) शलभ संबंधी।

शालव पुं. (तत्.) लोध्र वृक्ष, जिसके फूल लाल या सफेद रंग के होते हैं।

शालवृक पुं. (तत्.) कुत्ता, बिल्ली, वानर, बंदर, मृग, हिरन, शृगाल, गीदड़।

शालांकि स्त्री. (तत्.) 1. पुतली, कठपुतली 2. गुडिया।

शालांचि पुं. (तत्.) हरी पत्तियों वाली एक सब्जी विशेष।

शाला स्त्री. (तत्.) 1. घर, मकान, कमरा 2. पेड़ की बड़ी प्रधान शाखा 3. वृक्ष का तना 4. किसी

कार्य विशेष के लिए बना हुआ स्थान जैसे- पाकशाला, नृत्यशाला, पाठशाला 5. इंद्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के योग से बनने वाला एक वर्णिक छंद।

शालाक पुं. (तत्.) 1. पाणिनि 2. झाड़-झंखाड़।

शालाकी पुं. (तत्.) 1. शल्य चिकित्सक 2. नाई 3. बरछी धारण करने वाला।

शालाक्य पुं. (तत्.) आयुर्वेद में वर्णित शल्य-चिकित्सा संबंधी एक शाखा जिसमें गर्दन के ऊपर की इंद्रियों की चिकित्सा का वर्णन है।

शालाजिर पुं. (तत्.) मिट्टी का प्याला, कसोरा।

शालातुरीय पुं. (तत्.) पाणिनि (ये शालातुर नामक ग्राम में उत्पन्न हुए थे, इसी कारण इनका यह नाम पड़ा)।

शालानी स्त्री. (तत्.) विदारी, शालपर्णी, आयुर्वेद में औषधोपयोगी एक गण जिसमें देवदारु, सफेद पुनर्नवा आदि सम्मिलित हैं।

शालामृग पुं. (तत्.) शृगाल, गीदड़, सियार।

शालार पुं. (तत्.) 1. हस्तिनख 2. दीवार में गड़ी खूँटी 3. सीढ़ी, सोपान 4. पक्षि-पंजर, चिड़िया का पिंजरा।

शालि पुं. (तत्.) 1. जड़हन चावल, जो हेमंत ऋतु में होता है 2. गंधमार्जार, मुश्कबिलाव, जिसकी नाभि से कस्तूरी मिलती है।

शालिक पुं. (तत्.) 1. जुलाहा 2. कारीगरों का गाँव 3. एक प्रकार का कर या टैक्स वि. भवन-संबंधी, शाल-संबंधी।

शालिकण पुं. (तत्.) चावल का दाना।

शालिका स्त्री. (तत्.) 1. शारिका, सारिका, मैना पक्षी 2. विदारी का कंद, शालपर्णी 3. आधार, स्थान, गृह।

शालिनी स्त्री. (तत्.) 1. गृहिणी, गृहस्वामिनी 2. एक समवर्णिक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में मगण, 2 तगण और 2 गुरु के योग से 11 वर्ण होते हैं तथा 4-7 पर यति होती है।

शालिपर्णिका स्त्री. (तत्.) एकांगी नामक एक औषधि।